गैस पीड़ितों के सही मुआवजे की मांग को लेकर बिन पानी अनशन पर बैठने वाली गैस पीड़ित महिलाओं की कहानियां

1 लीला बाई ठाकुर (65)

1984 में लीला बाई अपने पति और चार बच्चों के साथ यूनियन कार्बाइड कारखाने से आधा किलोमीटर दूर दक्षिण की दिशा में रहती थीं। उनके पति यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री में वेल्डर थे। आधी रात के करीब पति के घर आने के कुछ देर बाद ही उनकी आंखों में जलन होने लगी। उन्हें खांसी और उल्टी भी होने लगी। उसके पति ने उसे बताया कि यह एक जहरीली गैस है जो उसके कारखाने से लीक हुई है। उन्होंने अपने चार बच्चों को पूरी तरह से कंबल से ढक दिया और अपने उन पड़ोसियों में शामिल नहीं होने का फैसला किया जो जहर के बादलों से बचने के लिए भाग रहे थे। गैस हादसे के समय उनकी सबसे छोटी बच्ची, एक महीने की थी। वह लंबे समय तक बीमार रहीं और 21 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। 4 वर्ष की आयु में गैस के संपर्क में आए एक बेटे की 26 वर्ष की आयु में असामयिक मृत्यु हो गई। लीला बाई, उनके पति और उनके दो बच्चे, जो आज तक बीमार हैं, उन सभी सभी को मुआवजे के तौर पर सिर्फ 25–25 हजार रुपए ही मिले है |

2. कपूरी यादव (70)

गैस हादसे की रात कपूरी बाई अपने भतीजे की शादी में व्यस्त थी। नाच–गाने के बीच सभी को खांसी आने लगी और आंखों में जलन की शिकायत होने लगी। शादी में आए मेहमान इधर–उधर भागने लगे। कपूरी बाई, जो 7 महीने की गर्भवती थी, वह भी जहाँ तक दौड़ सकती थी भागी और शहर के बाहर एक गाँव में रुकी। वह रात वहीं रुकी और

अगली सुबह घर आ गई। उसका पति और उनका एक बेटा शहर के दूसरे हिस्से में एक अलग शादी में गए थे और वे भी घर वापस आ गए थे। कपूरी ने अपने पति और उनके चार बच्चों को भयानक स्थिति में पाया। हादसे के दो महीने बाद कपूरी ने एक बेटी को जन्म दिया जो हमेशा बीमार रहती है। एक और बेटी मुन्नी भी कई वर्षों तक बीमार रही और 37 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। कपूरी ने अपने पति को खाने की नली (इसोफेजियल) के कैंसर से खो दिया।

3. बत्ती बाई रजक (41)

गैस हादसे के समय बत्ती बाई की उम्र मात्र 3 वर्ष थी। वह अपने माता–पिता और दो भाइयों के साथ रहती थी। उसकी माँ ने उसे बताया कि उसे और उसके भाइयों को पूरी रात उनके माता–पिता ने कंबल और रज़ाई से ढका रखा था। अगली सुबह वे सभी शहर की सीमा से बाहर एक गाँव में चले गए। बत्ती बाई कहती हैं कि उनके माता–पिता की आंखों की रोशनी चली गई है और उनके भाई पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। बत्ती बाई उसके परिवार के सभी सदस्यों को मात्र 25–25 हजार रुपए ही मिले है

4. चिरौंजी अहिरवार (80)

1984 में चिरौंजी बाई अपने पति, 3 बेटों और 2 बेटियों के साथ यूनियन कार्बाइड कारखाने के पास रहती थी। जब उनके परिवार को गैस लगी तो किसी को नहीं पता था कि क्या करना है लेकिन उन्होंने घर में रहने का फैसला किया। उस रात उनकी एक बकरी मर गई। गैस हादसे की सुबह वे अपने गांव घर के लिए निकले थे। बच्चे बहुत बीमार थे। गैस हादसे के तीन साल बाद उनकी एक बेटी की मौत हो गई।

5. विष्णु पंथी (58)

विष्णु अपने बड़े संयुक्त परिवार के साथ यूनियन कार्बाइड कारखाने के ठीक सामने रहती थी । उस रात उनकी बड़ी बहन के तीन बच्चों की मौत हो गई। उनके पति भी बुरी तरह से प्रभावित हुए जिसकी वजह से वो मजदूरी करने में असमर्थ हो गए । बाद में पता चला कि उन्हें क्षय रोग है जिसकी वजह से उनकी भी मृत्यु हो गई । उनके बच्चों को स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि परिवार की आय कम हो गई थी। उनका एक बेटा केवल 3 महीने का था जब गैस ने उन्हें मारा, उन्हें उसके लिए कोई मुआवजा नहीं मिला। सांस फूलने, सीने में दर्द, शरीर में दर्द और घबराहट से पीड़ित विष्णु को केवल 25 हजार रुपये मिले |

6. प्रेमलता चौधरी (75)

प्रेमलता और उनके पति, जो एक इंजन ड्राइवर के रूप में काम करते थे, अपने 4 बेटों और 2 बेटियों के साथ यूनियन कार्बाइड कारखाने के करीब रहते थे। हादसे के समय भोपाल से बाहर की उनकी मां उनसे मिलने आई थीं। वह उसी रात की भगदड़ में लापता हो गई और कभी नहीं मिली। उनके बेटे को झटके आते थे और 8 साल की उम्र में जब उसे झटके आ रहे थे तो उसकी गिराने से मृत्यु हो गई | बीमारी की वजह से उनके पति के लिए अपनी नौकरी जारी रखने बहुत कठिन हो गया था । उनकी आय कम होने के कारण उनके बेटों को स्कूल छोड़ना पड़ा। परिवार की हताश आर्थिक स्थिति ने उसकी एक बहू को आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया।

7. शहजादी (67)

गैस हादसे की रात शहजादी अपने पति और चार बच्चों गैस के जहरीले बादलो से बचने के लिए एक ट्रक में चढ़े ताकि वो वहां से भाग सके | वह अभी भी अपने दो पड़ोसियों को याद करती है जो ट्रक में मारे गए थे। हादसे के बाद उनके पति को अक्सर अस्पताल में भर्ती होना पड़ा और बीमारी की वजह से वो मजदूरी करने के लिए सक्षम नहीं रहे | फेफड़ों की गंभीर बीमारी (क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज) से पीड़ित होने के कारण 2019 में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें अपने पति की असमय मृत्यु के लिए कोई मुआवजा नहीं मिला। उसके बेटे को TB की बीमारी रोग हो गया । शहजादी को अभी भी सीने में दर्द, आंखों की रोशनी कम होने और पेट में जलन की समस्या है, उन्हें मुआवजे के तौर पर सिर्फ 25 हजार रुपये मिले, जैसा कि उनके परिवार के अन्य सदस्यों को मिला ।

8. कस्तूरी कसोटे (73)

कस्तूरी, जो यूनियन कार्बाइड कारखाने के ठीक सामने रहती थी, हादसे की रात अपने परिवार के साथ अस्पताल की ओर भागी। अस्पताल में उसने अपने एक पड़ोसी को बचाया जो जीवित था लेकिन लाशों के ढेर के नीचे फंसा हुआ था। उसने उस रात अपनी एक बेटी को खो दिया और दूसरी को कई साल बाद कैंसर से खो दिया । उनके पति, जो एक भवन निर्माण ठेकेदार थे, लकवाग्रस्त हो गए और उन्हें काम करना बंद करना पड़ा। 2017 में उनका भी निधन हो गया। उनके बेटे अक्सर बीमार रहते हैं और मजदूरी करने के लिए शारीरिक रूप से सक्षम नहीं है । उनकी दो पोतियों को शारीरिक और मानसिक विकलांगता है । कस्तूरी को अपने पति की मृत्यु के लिए कोई मुआवजा नहीं मिला है और उसने खुद मुआवजे के तौर पर 25 हजार मिले है ।

9. लक्ष्मी अहिरवार (65)

यूनियन कार्बाइड कारखाने के ठीक सामने जयप्रकाश नगर में लक्ष्मी बाई अपने पति और 3 बच्चों, सबसे छोटी, सिर्फ 3 महीने की एक बेटी के साथ रहती थी। उनके पति कार्बाइड कारखाने में दिहाड़ी मजदूर के तौर पर काम करते थे । उस रात गैस लगने के बाद से वह बीमार रहने लगे और दिहाड़ी मजदूरी करने में असमर्थ हो गए | पांच साल पहले उनकी मृत्यु हो गई थी और उनकी असमय मृत्यु के लिए उन्हें कोई मुआवजा नहीं मिला है। लक्ष्मी बाई की एक पोती विकृत हृदय के साथ पैदा हुई थी। उनके मोहल्ले के अधिकांश निवासियों की तरह, उन्हें और उनके परिवार के बाकी सदस्यों को सिर्फ 25 हज़ार रूपए मुआवजे के तौर पर मिला |

10. लक्ष्मी अहिरवार (58)

लक्ष्मी बाई की दो बेटियां केवल 4 महीने और दो साल की थीं, जब यूनियन कार्बाइड कारखाने कारखाने से निकली जहरीली गैस उनके मोहल्ले में फ़ैल गई जो कारखाने के ठीक सामने बसा था । उनके ससुर एक पुलिसकर्मी थे इसलिए उसके परिवार ने उस रात थाने के अंदर शरण ली। पुलिस थाना फैक्ट्री के नजदीक होने के कारण उसका परिवार बुरी तरह प्रभावित हुआ। उनके पति को हादसे के कुछ वर्षों बाद मधुमेह का पता चला था, जो कि गैस पीड़ितों में आम बीमारी है और मधुमेह का नियंत्रण में ना होने की वजह से उनका पैर काटना पड़ा था | तीन साल पहले उनकी मृत्यु हो गई। लक्ष्मी बाई, जिन्हें दिल की पुरानी समस्या है, को मुआवजे के तौर पर केवल 25 हजार रुपए मिले है |